इतिहास- प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत

[SOURCES OF ANCIENT INDIAN HISTORY]

पुरातात्विक स्त्रोत [Archaeological Sources]

प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक स्त्रोतों का विशेष महत्व है। पुरातात्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोतों से अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं, क्योंकि उनमें कवि की परिकल्पना अथवा लेखक की कल्पना शक्ति के लिए स्थान का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त जहाँ पर साहित्यिक स्त्रोत मौन हैं, वहाँ पुरातात्विक स्त्रोत ही वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी देने वाले प्रमुख पुरातात्विक स्त्रोत निम्नांकित हैं=
(i) अभिलेख, (ii) स्मारक और भग्नावशेष, (iii) मुद्राए, (iv) कलाकृतियाँ, (v) मिट्टी के बर्तन।

(i) अभिलेख- अभिलेख, प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत माने जाते हैं, क्योंकि अभिलेख समकालीन होते हैं। जिस राजा अथवा राज्य के विषय में अभिलेख पर लिखा होता है, अभिलेख की रचना भी उसी राजा के शासनकाल में की गई होती है। अत: उस तथ्य के सत्य होने की सम्भावना अधिक होती है। अभिलेखों से तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त
अभिलेख, राज्य की सीमाओं और राजा के व्यक्तित्व के विषय में भी सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। अभिलेखों के महत्व के सन्दर्भ में **डॉ. रमेश चन्द्र**

मजमूदार ने लिखा है, "**अभिलेख समसामयिक होने के कारण विश्वसनीय प्रमाण हैं और उनसे हमें सबसे अधिक सहायता मिली है।**"

अभिलेख विभिन्न रूपों में प्राप्त हुए हैं। शिला पर लिखे गए अभिलेख को शिलालेख स्तम्भ पर लिखे गए अभिलेख को स्तम्भ-लेख, ताम्र पत्र पर लिखे गए अभिलेख को ताम्र पत्र-लेख, मूर्ति पर लिखे गए अभिलेख को मूर्ति-लेख कहा जाता है ।
प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेख अधिकांशतः पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में लिखे गए हैं। लेकिन कुछ अभिलेख तमिल, मलयालम, कन्नड व तेलगू भाषाओं में भी लिखे गए हैं। अधिकांश अभिलेखों की लिपि 'ब्राही' है, जबकि कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में भी लिखे हुए प्राप्त हुए हैं।

सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के हैं। अशोक के अधिकतर अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में हैं। ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले 1837 ई.में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान ने पढ़ा था। अशोक के अभिलेखों से तत्कालीन धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

अशोक के बाद के अभिलेखों को दो वर्गों- सरकारी अभिलेख और निजी अभिलेख में बाँटा जा सकता है । सरकारी अभिलेख, राजकवियों द्वारा लिखी हुई प्रशस्तियाँ और भूमि अनुदान पत्र हैं। निजी अभिलेख अधिकांशतः मन्दिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण हैं।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेखों में अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कलिंग राज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख, स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भलेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय का महरौली लौह स्तम्भ लेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का एहोल अभिलेख, प्रतिहार नरेश मिहिरभोज का ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख और बंगाल के शासक विजयसेन का देवपाड़ा अभिलेख आदि महत्वपूर्ण हैं।

(ii) स्मारक और भग्नावशेष- प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में प्राचीन भवनों और भग्नावशेषों का भी विशेष महत्व है। प्राचीनकाल के स्मारकों तथा भग्नावशेषों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करके तत्कालीन इतिहास के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है । यद्यपि स्मारक और भग्नावशेष राजनीतिक स्थिति पर तो विशेष प्रकाश नहीं डालते, किन्तु इनसे धार्मिक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है ।

प्रत्येक काल के स्मारक और भग्नावशेष उस काल की कला, शैली तथा धर्म के प्रतीक होते हैं। प्राचीन स्मारकों तथा कलाकृतियों की प्राचीनता का अध्ययन करके कालक्रम का भी निर्धारण किया जा सकता है। प्राचीनकाल के महलों और मन्दिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत के मन्दिरों की अपनी कुछ विशेषताएं हैं, उनकी कला की

शैली ‘नागर-शैली' कहलाती है। इसी प्रकार दक्षिण भारत के मन्दिरों की कला ‘द्रविण-शैली' कहलाती है ।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में हुए उत्खननों से प्राप्त भग्नावशेषों से सम्भवतः विश्व की प्राचीनतम सभ्यता ‘सिन्धु सभ्यता' को जानकारी हुई। सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों के उत्खनन से प्राप्त प्रचुर सामग्री के अध्ययन से तत्कालीन मानव जीवन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

इसी प्रकार तक्षशिला में हुए उत्खननों से प्राप्त भग्नावशेषों से ज्ञात होता है कि यह नगरी कम से कम तीन बार बनी व नष्ट हुई। पाटलिपुत्र में हुए उत्खनन से मौर्यों के विषय में अनेक नवीन जानकारियाँ प्राप्त हुईं। गुप्तकालीन मन्दिरों; **उदाहरणार्थ**- कानपुर के पास स्थित भीतरगाँव का मन्दिर, नचनाकुठारा का पार्वती मन्दिर, सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर और देवगढ़ का दशावतार मन्दिर से गुप्तकालीन संस्कृति पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। इसी प्रकार सांची, भरहुत खजुराहो, महाबलिपुरम, अजन्ता, एलोरा, नासिक आदि अनेक स्थानों से प्राप्त प्राचीन स्मारकों व भग्नावशेषों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

विदेशों में भी अनेक ऐसे स्मारक मिले हैं, जो भारत के उन देशों के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय आस्थाओं पर आधारित अनेक स्मारक हैं। जावा में दींग के शिव मन्दिर, मध्य जावा के बोरोबुदूर तथा प्रम्बनम के विशाल मन्दिरों की मर्तियाँ तथा कम्बोज के अंगकोरवाट व

अंगकोरथोम के भग्नावशेषों से सिद्ध होता है कि भारतीयों ने वहाँ अपने उपनिवेशों की स्थापना की थी तथा अपनी संस्कृति का प्रचारप्रसार किया था। इनके अतिरिक्त मलाया, लंका तथा बाली द्वीपों में भी अनेक मन्दिर व स्मारक हैं, जो इन देशों से भारत के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं।

(iii) मुद्राएँ- मुद्राओं के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के पुरातात्विक स्रोतों में मुद्राओं का विशिष्ट स्थान है। अब तक सबसे प्राचीन प्रामाणिक सिक्के, जो हमें प्राप्त हुए, वे 'आहत सिक्के' कहलाते हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणी के राज्य प्रशासक अपना चिन्ह अंकित कर चलाते थे। अतः यह 'पंचमार्क' भी कहलाते थे, ये मुख्यतः चाँदी के थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने में महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त होती है। मुद्राएँ तत्कालीन राजनीतिक
धार्मिक, आर्थिक स्थिति एवं कला पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। विद्वान लेखक **बी. जी. गोखले** ने मुद्राओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "**प्राचीन सिक्के (मुद्राएँ) अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि उनके बिना विश्वसनीय इतिहास की रचना प्राय: असम्भव है।**" प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से निम्नांकित कारणों से महत्वपूर्ण हैं-
(अ) मुद्राओं पर अंकित तिथि से मुद्राओं को जारी करने वाले शासक की तिथि के विषय में जानकारी मिलती है।
(ब) मुद्राओं के प्राप्ति स्थलों के आधार पर विभिन्न शासकों के साम्राज्यों की

सीमाएँ निर्धारित करने में सहायता प्राप्त होती है। यदि किसी शासक की एक ही स्थान पर बहुत सारी मुद्राएँ प्राप्त होती हैं तो इससे स्पष्ट होता है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का अंग रहा होगा। जिस स्थान से मुद्राएँ कम मात्रा में मिलती हैं, तो यह माना जाता है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का प्रत्यक्ष अंग नहीं रहा होगा, बल्कि उस स्थान से उस शासक के राज्य के व्यापारिक सम्बन्ध रहे होंगे।

(स) मुद्राओं से तत्कालीन राज्यों की आर्थिक स्थिति की पर्याप्त जानकारी मिलती है। स्वर्ण रजत अथवा ताँबे की मुद्राएँ आर्थिक स्थिति की स्वयं ही मापदण्ड बन जाती हैं। जो राज्य वैभवशाली होते थे, उनके द्वारा स्वर्ण धातु के सिक्के ढलवाए जाते थे और जिन राज्यों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती थी, उनके द्वारा रजत, ताँबे अथवा मिश्रित धातु के सिक्के ढलवाए जाते थे।

(द) मुद्राओं पर उत्कीर्ण विभिन्न देवी-देवताओं के चित्रों से तत्कालीन धर्म के विषय में जानकारी मिलती है।

(य) विदेशों में भारतीय मुद्राओं के प्राप्त होने से प्राचीन भारतीय शासकों के अन्य देशों के साथ सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(र) मुद्राओं पर अंकित विभिन्न चित्रों व संगीत वाद्यों से तत्कालीन कला एवं संगीत के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(iv) कलाकृतियाँ- भारत में विभिन्न स्थानों पर किए गए उत्खननों से अनेक कलाकृतियाँ; जैसे भित्ति चित्र, स्तम्भ, मूर्तियाँ, मन्दिर, खिलौने, आभूषण आदि विभिन्न वस्तुएं प्राप्त की गयीं हैं। इनसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति

जानकारी प्राप्त होती है । इन भारतीय की कलाकृतियों में से अनेक खण्डित भी हैं, परन्तु फिर भी ये कलाकृतियाँ प्राचीन भारत के । सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से उपयोगी हैं । सिन्धु घाटी में प्राप्त हुए खिलौने, मूर्तियाँ और आभूषण, अशोक के स्तम्भ, विभिन्न बौद्ध प्रतिमाएँ, मन्दिरों के भग्नावशेष और मूर्तियाँ, ताँबे अथवा काँसे की मूर्तियाँ, अजंता और वाद्य गुफाओं के भित्ति चित्र आदि सभी कलाकृतियाँ प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुए है।

(v) मिटटी के बर्तन- भारत के विभिन्न स्थानों से मिटटी के बर्तन भी प्राप्त हुए है। इन बर्तनों का भी अत्यधिक ऐतिहासिक महत्व हैं। ये बर्तन न केवल कला की दृष्टि से उपयोगी हैं, बल्कि इनकी मिटटी की जाँच करके उनकी आयु का भी पता लगाकर इतिहास के कालक्रम को जानने में पर्याप्त सहायता मिलती है। इस विवेचन से स्पष्ट है की प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोतों का अभाव नहीं है। प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के लिए विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।